17-4-64
17-4-64

बिल्कुल वैसे के वैसे ही हैं। जो समझते हैं हम स्वर्ग के लायक बन रहे हैं। वो फिर औरों को भी बनाते हैं। उनकी चलन में बहुत फर्क है। यहां देवताई पणा दिखना है। अक्सर पण दिखाने में पद भ्रष्ट हो जावेंगे। वास्तव में हम सब कब्र हाबल थे। रावण ने कब्र हाबल कर दिया है। बाप आकर कब्रस्तान से निकालते हैं। दुनिया इस समय कब्रस्तान है। उसमें भी नम्बरवार है भारत है कब्रस्तान। पहले नम्बर वन परस्तान था। अब कब्रस्तान है। ईसाईयों को अब परस्तान समझो है। खास कृष्ण के लिये जैसे परस्तान है। क्योंकि वहां धन है बहुत। धन और सबके पास है सिर्फ भारत को नहीं है। भारत जितना कर्जा और कोई नहीं उतना मूर्ख होने वाला, जो समझ है उनको बाहर से मंगाते हैं यह मशीनरी आप आकर बनाओ। अकल वहां से लेते हैं। फिर भी उसमें नया कितना है। तो बाप समझाते हैं अपनी शिकल को तो देखो। तुम दैवी चलन चलने लायक बन रहे हो? समझते हो हम श्रीमत पर चल रहे हैं। मम्मा बाबा का आज्ञाकारी बच्चा बिल्कुल फुल आते जाते जाते हैं। काम कोयला आता। आत्मा क्रोध का भूत तो मेरे में नहीं है। यह होना भूत है बहुत खराब है। क्रोध से ही एक दो को जलाते हैं। यह बड़ा भारी दुश्मन है। इनको भी भगाना चाहिये। देखना है मेरे में कोई अवगुण तो नहीं है। अगर मैं श्रीमत पर न चलूं तो बिल्कुल सत्या नाश हो जावेगी। श्रीमत मिलती ही इस लिये है कि सत्या कर्मी हो जाय अविनाशी बन जाय। जब तक योग नहीं तब तक मनुष्य कुछ भी सुधर नहीं सकते। जितना बाप को याद करेंगे इतनी ताकत आवेगी और गुण धारण होंगे। नहीं तो माया कदम कदम पर थप्पड़ मारेगी। प्रतिज्ञा करेंगे हम क्रोध नहीं करेंगे। फिर 5 मिनट बाद क्रोध कर लेंगे। आसुरी आदतें जन्म जन्मान्तर की पड़ी हुई है। तो इनको मिटाने में टाईम लगता है। इन शत्रुओं को दूर करना है। लोभ मोह यह फिर है इनके छोटे, बड़े विकारों के भी नम्बरवार हैं। पहले नम्बर है अशुद्ध अहंकार। फिर काम क्रोध। यह सिद्धा और कोई है। ~~[illegible]~~ देही को याद करो। सन्यासी लोग तो अपने को P समझते। यह है बड़े ते बड़ी भूलना। कहते हैं देही P है। बाप कहते हैं तुम देही आत्मा हो न कि देही P हो। P फिर इतने सब कैसे हुए। P तो जन्म मरण रहित है। उनको कहा जाता है परमपिता परम आत्मा। वो बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं बच्चे अब नहीं पुरुषार्थ करो मौत तो कोई भी समय आ जावेगा। फिर कुछ कर न सकेंगे। अनेक प्रकार के एक्सीडेन्ट होते रहेंगे। आफतें आई कि आई। आज कल करते मर जावेंगे फिर पद पा न सकेंगे। सपूत बच्चे तो शिव बाबा के आज्ञाकारी वफादार होते हैं। बाप सब बच्चों को जानते हैं। रावण ने बिल्कुल गन्दा एकदम दुर्गति बनाया है। इसका नाम रखा है "डेविल वर्ल्ड"। आसुरी दुनिया। अब तुमको देवता बना रहे हैं। श्रीमत पर चलेंगे तो बनेंगे। स्कूल में पढ़ाते भी हैं, मैनरस भी सिखलाते हैं। यहां भी मैनरस सीखने हैं। बुरा है दैवी चलन। अशुद्ध अहंकार यह बड़ा जबर्दस्त मैनर है। यह सबको गिराते हैं। गिरो तो देह अभिमान आ जाता है। बाप कहते हैं आपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जावेंगे। माया ने सब के पर कब्जा किये हैं। कोई भी वापस जा नहीं सकते। नहीं तो आत्मा उड़ने में कितनी तीखी है। परन्तु परम आत्मा कोई भी जा न सकते। पतित पावन बाप के सिवाय न कोई पावन निराकारी दुनिया में जा सकते न पावन साकारी दुनिया में आ सकते। मनुष्य आने जाने को भी समझ नहीं सकते। जब कि विनाश होना है, सन्ध्या समय सबको बायले डाला था फिर क्या हुआ कुछ भी समझते नहीं। बाप आए हैं धर्मी दुनिया आदि सनातन देवता धर्म स्थापन करने। यह कोई थोड़े समझते हैं कि गीता में भगवान ने L.N का राज स्थापन किया। ना गीता में न भागवत में है कि भगवान आए थे जब महाभारत लड़ाई लगी थी तो बराबर सब ने ज्ञान यज्ञ रचा था जिसमें विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई जिसमें यह दुनिया विनाश हुई। और जिनको राज योग सिखाया वो राजाओं के राजा L.N बने। तुम जानते हो हम भगवान से पढ़ते हैं, पढ़ कर स्वर्ग के मालिक बन रहे हैं। आगे तो कृष्णचन्द्र का राज था। अब फिर यह आत्मा वासी राजते हैं हम मालिक हैं।

17-4-64

[illegible] हो। हम सारे विश्व के मालिक बनते हैं। आप हैं आकर के [illegible] शरीर [illegible]
है। आत्मा मनुष्य की ऐसी महान अर्थात् दिव्य बनाते है। मनुष्य से देवता कैसे बनाया कल बताया था
कहीं से नहीं है अन्य ग्रंथ पढ़ते हैं फल कुछ भी प्राप्त नहीं अंधे तुम बनते रहते हो। तो तुम
बच्चों को दैवी गुण धारण करने हैं जो बात पर पलना है नहीं तो पतन हुए ही रहेंगे। ज्ञान की
पूरी धारणा होगी तो दैवी मैनरस भी आयेंगे नहीं तो [illegible] है यह अज्ञानी है कोई न कोई
अवगुण है। बाप बहुत अच्छी रीत समझाते हैं आत्मा से भी हे आत्मायें वाच्य करते हैं हे बच्चों
मैं तुमको पढ़ाने आया हूं जब बैरिस्टर आए तो खुश होते हैं तुमको राज्य का मालिक फिर
मैं बनाने आया हूं। मैं हूं राजा का राजा, मैं [illegible] आकर तुम बच्चों को राज्य का मालिक बनाता
हूं। तुम इस समय महान दुर्भाग्यशाली बन गये हो पहले सौभाग्यशाली थे नम्बरवार पुरुषार्थ
अनुसार फिर तुम सौभाग्यशाली बन रहे हो। यह खेल ही है [illegible] आया दुर्भाग्यशाली बनाती
है फिर बाप सौभाग्यशाली बनाते हैं। नम्बर तो हैं कोई 100% कोई 90% कोई 80% जो
जितना पढ़ेगा उतना वो देखेगा। लिखना रखना चाहिये हमको रुद्र माला में नम्बरवार परोया
है। जैसे वे स्टूडेन्ट्स दिलाने के हकदार होते हैं तो एक किलाश में ठहरे वे बैठते हैं।
मैकिम निकलेगी उसी अनुसार नम्बर मिलेंगे फिर ऐसे ही नम्बरवार हकदार हो जायेंगे
यहां भी तुम पढ़ कर फिर नम्बरवार तुम आत्मायें रुद्र माला में परोयेंगी उनका तो [illegible] राजरा
बड़ा है ना फिर वहां से विष्णु के विजय माला में नम्बरवार आकर राज्य गद्दी पर बैठेंगे। यह
बात बैठ समझने है और कोई मनुष्य नहीं जो रुद्र माला और विष्णु माला को जान सके। तुम
[illegible] बच्चों की [illegible] नहीं है क्योंकि रेस चल रही है आत्मा बहुत
अच्छा [illegible] है कोशिश करो आत्मा जिस [illegible] फिर इतनी
[illegible] में [illegible] परोया [illegible] है [illegible] तो फिर
तुम्हें [illegible] डायरेक्शन दे देते बहुत [illegible] है तो फिल
[illegible] हम तो बाप हैं [illegible] रुकेंगे तो होना [illegible] देखा जायेगा
नम्बर [illegible] बहुत हैरान होते हैं सोच आता भी तो [illegible] देते हैं
[illegible] तो [illegible] अथवा [illegible] का [illegible] बनाते पढ़ते
हैं [illegible] डायरेक्शन दे देते हैं। बाप अथवा [illegible] नहीं देते
[illegible] डायरेक्शन दे आगे जाती फिर बाप [illegible] करते हैं। बाप तो कहते
हैं [illegible] सामने तुम्हें स्वर्ग की महारथी बनाने आया हूं [illegible]
जेल से निकाल दूंगा अशरीरी घर में ले जाता हूं फिर [illegible] पढ़ न चल
[illegible] रीत रिवाज [illegible] फिर [illegible] होते हैं जैसे तीर्थों
से [illegible] आते हैं [illegible] तो कोई [illegible] नहीं। अब तुम्हारी यात्रा
पूरी [illegible] हो यह शरीर छोड़ आत्मा [illegible] फिर पुरुषार्थ
[illegible] यह आपके [illegible] अभिमान [illegible]
[illegible] अहंकारी [illegible] अपने हठ से उतरते
[illegible] बाजा
[illegible] हम कुछ
[illegible] है [illegible]